Shimla Eco Vibes, Vol. 1, Issue 1, Sept-Oct 2024, pp 52

संकेत अनिष्ट के...

©**अशोक चौहान**, Retired Banker, passionate poetry writer, who conveys concerns of environment and ecology

💫💫💫
अति वक्र
ऋतु चक्र
अपशकुन
देख सुन
रात दिन
उद्विग्न !
💫💫💫
है तीर निकलने को
कमान से ,
अनहोनी घटेगी
ईमान से !
💫💫💫
शीत निद्रा सहसा टूटी है ,
पुष्प कोंपल अकाल फूटी है ;
पृथ्वी को जैसे ज्वर है ,
माथा फटने का डर है !
💫💫💫
विचित्र स्पंदन ,
पीड़ा क्रंदन ;
चटखता अलाव ,
मौसम बदलाव ;
अनिष्ट के संकेत ,
दूर दूर तक रेत !
💫💫💫

💫💫💫
म्यान यहाँ एक,
कटारें अनेक ;
खो बैठे विवेक ,
क्या बुरा क्या नेक ?
धसकते गाँव ,
न पेड़ न छाँव !
💫💫💫
ढेरों विलास,अमिट प्यास ,
शहद से ग़ायब मिठास ;
इमली में नहीं खटास ,
अंध-तमस खोया उजास !
💫💫💫
यूँ सिमट रही मिट रही
हिमनद की हस्ती ,
लीलने को सागर है
साहिल की बस्ती ;
नीड़ को थामने आज
असमर्थ डालियाँ ,
खेत खेत खोखली
गेंहूँ की बालियाँ !
💫💫💫
विपदा खड़ी द्वार पे आन ,
हम सोये हैं लम्बी तान !
💫💫💫